1:1, 2

अभिवादन: जिन्होंने एक जैसा विश्वास प्राप्त किया है

दूसरा पतरस में, प्रेरित का अधिकार ताक पर है। प्रोत्साहित करने वाले या प्रोत्साहन देने वाले उपदेशक की तुलना में जो उपदेशक फटकार लगाता है, उसे अधिक अधिकार की आवश्यकता होती है। पतरस के कुछ पाठक झूठे उपदेशकों के झांसे में आ गए थे। जब मसीहियों ने झूठे उपदेशकों का प्रेरित के कथनानुसार सामना किया तो प्रेरित का अधिकार ताक पर होना सामान्य बात थी। इस कारण, वह अपने आरंभिक शब्दों में अपनी पहचान बताने के लिए अधिक चौकस था। उसके शब्द सावधानीपूर्वक संजोए गए थे ताकि पत्री की औपचारिकता स्पष्ट की जा सके।

अभिवादन (1:1, 2)

[1]शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे समान बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है। [2]परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए।

आयत 1. यद्यपि NASB इस पत्री का शुभारंभ **शमौन पतरस** (Simon Peter) से करता है, लेकिन पाण्डुलिपि प्रमाण, शिमौन ("Simeon") का पक्षधर है।[1] शमौन "Simon" (Σίμων, *सिमोन)* नाम यूनानी भाषा का लिप्यंरण है। शिमौन "Simeon" (Συμεών, *सुमेओन),* जिसको अंग्रेजी में "Symeon," भी लिपि बद्ध किया जाता है, इब्रानी/अरामी नाम के उच्चारण के निकट है। यह एक आम नाम था। LXX में इस नाम की वर्तनी "Simeon" है। नये नियम में पतरस को केवल यहाँ और प्रेरित के काम की पुस्तक 15:14 में ही "Simeon" शिमौन संबोधित किया गया है। यदि 2 पतरस पलिस्तीन के संदर्भ में लिखा गया था तो इस पत्री के आरंभिक शब्दों में पतरस के नाम का पुराना रूप प्रयोग किया गया है।

कि शिमौन "Simeon" उस समय का आम नाम था जिसका नये नियम में प्रयोग मिलता हैः शिमौन (Simeon) एक वृद्ध पुरुष थे जिनकी मुलाकात यीशु के माता-पिता से मंदिर में उसके समर्ण के समय हुई (लूका 2:25, 34), यीशु की वंशावली में एक व्यक्ति का नाम है (लूका 3:30), और अन्ताकिया में इस नाम के एक भविष्यवक्ता व उपदेशक थे (प्रेरित 13:1)। स्पष्टता के दृष्टिकोण से, हम निम्न टिप्पणियों में शमौन ("Simon") वर्तनी प्रयोग करेंगे।

सुसमाचार वृत्तांतों में, विशेषकर यूहन्ना के सुसमाचार में, बहुधा शमौन पतरस ("Simon Peter") प्रयोग किया गया है। जब अन्द्रियास का प्रथम संदर्भ आया तो वहाँ पर उसकी पहचान शमौन पतरस ("Simon Peter") के रूप में की गई है (यूहन्ना 1:40), यद्यपि इस स्थान पर दो नामों की यह जोड़ी भ्रम की स्थिति उत्पन्न करती है। आगे की कथा में, अन्द्रियास, "शमौन" ("Simon") को यीशु के पास लाता है। उनकी प्रथम भेंट के समय यीशु ने उस प्रेरित को "पतरस" नाम का अरामी समतुल्य "कैफा" ("Cephas") कहकर संबोधित किया। दोनों शब्दों का अर्थ "चट्टान" है, लेकिन सुसमाचारों में पतरस को केवल इसी स्थान पर कैफा संबोधित किया गया है। पौलुस ने पतरस को गलातियों और 1 कुरिंथियों दोनों पत्रियों में वर्णित किया है। पौलुस ने प्रेरित को कैफा कहकर बुलाया जाना पसंद किया। कई अवसरों पर, इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब ये दोनों नाम "शमौन" और "पतरस," जैसे कि "यीशु" के साथ "मसीह" लिया जाता है, युगल में लिया जाता है ताकि एक व्यक्तिगत नाम "शमौन पतरस" बन जाए। दो नामों को संयुक्त करने के पीछे हमारा कोई विशेष महत्व नहीं है; फिर भी, यह अति महत्व है कि प्रेरित ने अपने पाठकों के मध्य अपनी पहचान कराने के लिए अपना पुराना नाम "शमौन" प्रयोग किया है।

पहला पतरस में, प्रेरित ने अपनी पहचान "पतरस, यीशु मसीह का प्रेरित" करके किया है। दूसरा पतरस में उसने इससे थोड़ा अधिक कहा है। उसने कहा कि वह शमौन पतरस है और इससे भी थोड़ा आगे बढ़कर उसने कहा कि **जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है**। NASB अनुवाद के अनुसार, दास यूनानी भाषा में सामान्य रूप से प्रयोग किया जाने वाला (δοῦλος, *डुलोस)* शब्द है। पौलुस ने परमेश्वर के साथ अपने संबंध का विश्लेषण करने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया है (रोमियों 1:1; फिलिप्पियों 1:1)। प्रेरित शब्द "बारहों में से एक" के समतुल्य प्रयोग किया गया है। प्रेरित 1:21-26, में कुछ ऐसा कारण दिखाई देता है कि क्यों मसीही लोग प्रेरितों की संख्या को बारह ही रखना चाहते थे। पौलुस को "बारहों में" केवल एक बार गिना गया है (1 कुरिंथियों 15:5)। उसी संदर्भ में, उसने बारहों को "सब प्रेरितों" के समतुल्य माना (1 कुरिंथियों 15:7)। उत्तरवर्ती अवतरण में, उसने प्रभु के भाई याकूब को प्रेरितों से अलग पहचान दी, लेकिन गलातियों 1:19 में उसने याकूब को प्रेरितों के श्रेणी में ही रखा है। जब पौलुस ने लिखा, "और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं: प्रथम प्रेरित, ..." (1 कुरिंथियों 12:28), और "उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त

करके" (इफिसियों 4:11) करके दे दिया, तो इससे यह स्पष्ट नहीं है कि क्या उसने "प्रेरित" शब्द को "बारहों" के समतुल्य माना कि नहीं।

स्पष्ट रूप से नये नियम में कभी-कभी "प्रेरित" शब्द तकनीकी अर्थ के साथ प्रयोग किया गया है तो यह कभी-कभी वर्गीकरण के आधार पर भी प्रयोग किया गया है। वर्गीकरण के अनुसार, इस शब्द का अर्थ "भेजा हुआ है" या संभवतः "जो किसी विशेष कार्य [मिशन] के लिए भेजा गया है" है। यह शब्द प्रशासनिक प्रतिनिधि या राजदूत की ओर संकेत करता है। इस आशय से पौलुस और बरनबास "प्रेरितों." थे (प्रेरितों. 14:4, 14)। प्रेरितों. 14 में उनको "प्रेरित" इसलिए संबोधित किया गया होगा क्योंकि वे सूरिया के अन्ताकिया की कलीसिया के लिए "राजदूत" थे। लूका ने "प्रेरित" शब्द का तकनीकी आशय से प्रयोग किया है जिसका अर्थ "बारहों में से एक" है। वर्गीकरण के अनुसार प्रेरित 14:4, 14 को छोड़कर, संभवतः इसी कारण उसने कभी भी "पौलुस" को प्रेरित करके संबोधित नहीं किया है। पौलुस के अनुसार "प्रेरित" कलीसिया में अधिकारपूर्ण कार्य है। यह मसीह के साथ संबंध दर्शाता है जहाँ से प्रेरित को अधिकार प्राप्त होता है। जिस प्रकार पतरस ने "प्रेरित" शब्द का प्रयोग किया है उससे यह प्रमाणित नहीं होता है यह शब्द बारहों को छोड़कर अन्य लोगों के लिए भी प्रयोग किया गया था।[2]

पतरस ने एक ओर आधिकारिक स्थिति और दूसरी ओर अपने पाठकों के मध्य अपनी पहचान की एक बहुत ही नाजुक स्थिति का संतुलन किया है। उसने लिखा, **जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे समान बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है**। प्रेरित को "मसीही जनसाधारण" और "याजक" के बीच कृत्रिम भिन्नता के बारे में कुछ भी पता नहीं है। प्रेरित और उसके पाठकों का विश्वास "एक समान" है। नये नियम में कभी-कभी विश्वास का निर्धारण इस प्रकार किया गया है जैसे कि एक शिष्य व्यक्तिगत रूप से अपने स्वामी/प्रभु पर भरोसा करता है (देखें इब्रानियों 11:1), और कभी-कभी यह मसीही सिद्धांत का भी निर्धारण करता है (यहूदा 3)। जबकि दोनों में से कोई भी अर्थ इस संदर्भ में समायोजित हो सकता है, यहाँ अंग्रेजी भाषा के article की अनुपस्थिति ("faith" instead of "the faith") यह दर्शाती है कि पतरस अपने पाठकों को यह स्मरण दिला रहा है कि उन्होंने अपना विश्वास, भरोसा परमेश्वर पर किया है।

यदि पतरस ने अपने पाठकों को "विश्वास" का निष्क्रिय ग्रहण करने वाला समझा होता तो "विश्वास प्राप्त किया" शब्दों का कोई निहितार्थ नहीं होता। "विश्वास" परमेश्वर की ओर जादुई रूप से किसी के अंदर ठुंसा हुआ वरदान नहीं है। यह तो जब किसी को सुसमाचार सुनाया जाता है तो उस व्यक्ति का यह व्यक्तिगत चुनाव होता है। जब लूका ने लिखा, "बहुत से कुरिंथवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया" (प्रेरित 18:8), तो इससे उसका यह तात्पर्य था कि उसने उनके साथ किसी प्रकार की चालाकी नहीं की बल्कि वह तो उनके

सामने मसीह पर भरोसा करने के लिए चुनाव रख रहा था। अंग्रेजी भाषान्तर, यूनानी शब्द πίστις *(पिस्टीस)*, जिसका अर्थ "विश्वास" ("faith"), और πιστεύω *(पिस्टेओ)*, जिसका अर्थ भी "विश्वास" ("believe") है, के अलग-अलग शब्दों के मूल प्रयोग से यह मूल यूनानी भाषा के अर्थ को अस्पष्ट करता है।

पतरस के पाठकों ने जो विश्वास प्राप्त किया वह उन्होंने **हमारे परमेश्वर की धार्मिकता** के कारण प्राप्त किया था। इस अनुच्छेद में "धर्मी" या "धार्मिकता," एक ही यूनानी भाषा का अनुवाद है जिसमें धार्मिकता की ओर अग्रसर होना पाया जाता है। धर्मी ठहराए जाने का अर्थ धर्मी बनाए जाने से है। बहुधा इस शब्द का विधिक अर्थ निकाला जाता है। जब कोई न्यायाधीश विवादी के पक्ष में न्याय सुनाता है तो इस मामले का जीतने वाला "दोषमुक्त" समझा जाता है। पौलुस ने बहुधा इस शब्द का प्रयोग इसी संदर्भ में किया है। मसीह का एक प्रतिनिधि प्रायश्चित के रूप में मृत्यु के द्वारा एक पापी दोषमुक्त ठहराया जाता है और वह धर्मी गिना जाता है। लेकिन, ऐसा लगता है कि पतरस के मन में यहाँ पर इस शब्द का विधिक प्रयोग बहुत कम है। "परमेश्वर की धार्मिकता" से पतरस का तात्पर्य परमेश्वर का धर्मी और उचित मार्ग था। इस पत्री के पाठकों को विश्वास इसलिए प्राप्त हुआ था क्योंकि परमेश्वर ने धार्मिकता से कार्य किया था – अर्थात, वह अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वाश्वायोग्य था। उसका न्याय और प्रेम, यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पाया जाता है, जिसने पाप का मोल चुकाकर परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप का दरवाजा खोला।

इस आयत के अंतिम भाग का अनुवाद कठिन है। क्या यह "परमेश्वर की धार्मिकता" और "हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता" है? ऐसा KJV के द्वारा संबोधित किया गया है। हमारे (ἡμῶν, *हेमोन)* शब्द केवल एक ही बार उधृत हुआ है। इसको तर्कसंगत "हमारा परमेश्वर" (NASB) या "हमारा उद्धारकर्ता" (KJV) समझा सकता है। लेकिन यूनानी भाषा के वाक्य में इसका अर्थ परमेश्वर के साथ समझा जा सकता है। इन सब कारणों से सिद्धांत का ध्यान रखते हुए NASB ने इसका अनुवाद, "परमेश्वर की धार्मिकता" और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, किया है। निस्संदेह, यही इसका उचित अर्थ है।

पतरस ने यीशु नासरी को परमेश्वर और उद्धारकर्ता दोनों समझा। इस पत्री में उसने चार बार (1:11; 2:20; 3:2, 18) "प्रभु और उद्धारकर्ता" वाक्यांश प्रयोग किया है जहाँ इसका संदर्भ परमेश्वरत्व के एकल व्यक्तित्व के लिए किया गया है। पतरस का यह वाक्यांश इस बात पर विराम लगाता है कि यीशु किसी तरह पूर्ण ईश्वर नहीं है और उसकी रचना की गई है।[3]

आयत 2. अपने पाठकों की पहचान करने के पश्चात, प्रेरित ने उनकी ओर से एक संक्षिप्त प्रार्थना की। **अनुग्रह और शांति . . . बहुतायत से बढ़ती जाए**, 1 पतरस 1:2 में पाए जाने वाले यूनानी के समान्तर है, लेकिन उसने यहाँ परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा बहुतायत से बढ़ती जाए, जोड़ा दिया है। जैसे-जैसे हम पत्री के भेदों को खोलते जाएंगे तो उससे यह स्पष्ट

हो जाएगा कि पतरस ने "पहचान" शब्द का प्रयोग आकस्मिक नहीं किया था। यह शब्द इसके आगे के कुछ और आयतों में चार बार और प्रयोग किया गया है। प्रेरित ने γνῶσις *(नोसिस)* के बजाय इससे भी अधिक कड़ा शब्द ἐπίγνωσις *(एपिग्नोसिस)* प्रयोग किया है।

ऐसा लगता है कि दूसरे अध्याय में सम्बोधित झूठे उपदेशकों का दावा कि उनको कुछ सीमा तक "ज्ञान" प्राप्त है, उन्हें बोलने और उनको सुने जाने का अधिकार देता है। पतरस के संक्षिप्त विवरण से हमें यह समझने में कठिनाई होती कि इन झूठे उपदेशकों ने किस क्षेत्र में श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करने का दावा किया था। दूसरा पतरस का ज्ञानवाद, एक झूठी शिक्षा जो दूसरी और तीसरी सदी में फलवंत हुआ था, का सिद्धांत समझना अनिश्चित है। उन उपदेशकों का दावा था कि उनको विशिष्ठ ज्ञान प्राप्त है जिससे जटिल सिद्धांत निकलकर सामने आया और अंत में उसने अनिश्चितता का रूप धारण कर लिया। नये नियम के कुछ टीकाकार इस पत्री के अवतरण में जहाँ कहीं "ज्ञान" दिखाई देता है वहीं उन्हें ज्ञानवाद की अवधारणा दिखाई देती है। इस प्रकार के संदर्भ को कठिनाई से उचित ठहराया जा सकता है। दूसरा पतरस के झूठे उपदेशकों और दूसरी सदी के ज्ञानवादी उपदेशकों के मध्य संबंध को अति सूक्षम धागे से ही जोड़ा जा सकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]"शमौन" ("Simon") और "शिमौन" ("Simeon") के प्रयोग से अनुवादकों का तात्पर्य यह नहीं है कि "शमौन" ("Simon") को बेहत्तर वाचनिक समर्थन प्राप्त है। कुछ अनुवादक संशय की स्थिति को दूर रखने के लिए, इस चरित्र के नाम की एक ही वर्तनी रखने का प्रयास करते हैं। NIV का प्राक्थन इस संदर्भ को स्पष्ट करता है। [2]जैसे कि जेम्स वाल्टर के द्वारा आरोप लगाया जाता है कि "प्रेरित" किसी पुरूष या स्त्री की उपाधि नहीं है। (जेम्स वाल्टर, "'फीबे' और 'यूनियास' – रोमियों 16:1-2, 7," *एस्सेज आन वीमेन इन अर्लियेस्ट क्रिश्चियनिटी*, सम्पादक केरोल आस्बॉर्न [जॉपलिन, मिसौरी : कॉलेज प्रेस, 1993], 1:185-90.) जॉन पेंटर के निष्कर्ष को कम समर्थन मिला है कि प्रेरित के पद और अधिकार बारहों के अलावा अन्य लोगों को भी प्राप्त था। (जॉन पेंटर, *जस्ट जेम्सः द ब्रदर आफ जीजस इन हिस्ट्री एण्ड ट्रेडीशन* [मिनियापोसः फॉरट्रेस प्रेस, 1999], 60.) इस पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि पौलुस ने विशेष परिस्थिति को स्वीकार किया जिसने उसे प्रेरिताई का अधिकार प्राप्त किया (1 कुरिंथियों 15:8-10) जबकि वह "बारहों" में से नहीं है। [3]यह ऐरियन सम्प्रदाय की शिक्षा थी जो चौथे सदी में बहुत विकसित हो गए थे।